B. A. (GENERAL) (BAG)

Term-End Examination December, 2024

BPSC-132: INDIAN GOVERNMENT AND POLITICS

3RD PART

MOST IMPORTANT QUESTIONS FOR EXAM

MUST WATCH TO SCORE GOOD MARKS

Hindi & English Both

With PDF

Analyze the relationship between caste, class and politics.

जाति, वर्ग और राजनीति के बीच संबंधों की समीक्षा कीजिए।

1. Caste and Politics:

Caste plays a significant role in shaping political behavior and alliances in India. Politicians often appeal to **caste-based identities** to gain support from particular groups. In many cases, caste becomes a **political tool** for mobilizing votes, leading to **caste-based political parties** or alliances. This is evident in the rise of leaders from **OBCs** (**Other Backward Classes**), **Scheduled Castes** (**SCs**), and **Scheduled Tribes** (**STs**), who have mobilized their communities to demand more political representation and rights. For example, leaders like **B.R. Ambedkar** (who championed the rights of Dalits) and **K. Karunanidhi** (who advocated for the rights of backward classes in Tamil Nadu) have played crucial roles in shaping Indian politics.

जाति और राजनीति:

जाति भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नेता अक्सर **जाति-आधारित पहचान** का उपयोग करके विशेष समूहों से समर्थन प्राप्त करते हैं। कई मामलों में, जाति एक **राजनीतिक औजार** बन जाती है, जिससे चुनावी समर्थन जुटाने के लिए जाति-आधारित पार्टियाँ और गठबंधन बनते हैं। यह **OBCs** (अन्य पिछड़ा वर्ग), SCs (अनुसूचित जातियाँ), और STs (अनुसूचित जनजातियाँ) के नेताओं के उदय में स्पष्ट है, जिन्होंने अपनी समुदायों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व और अधिकारों के लिए

संगठित किया। उदाहरण के लिए, **डॉ. बी.आर. आंबेडकर** (जिन्होंने दलितों के अधिकारों का समर्थन किया) और **के. करूणानिधि** (जिन्होंने तिमलनाडु में पिछड़ी जातियों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया) ने भारतीय राजनीति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. Class and Politics:

Class, which is based on economic status, is also a central factor in Indian politics. The **middle class** and **upper class** are often more politically active due to their access to resources, education, and power. They are more likely to influence **policy-making** and **governance**. However, **lower classes** and the **working class** (often comprising **labourers**, **farmers**, and **the marginalized**) form a significant voting bloc in elections. Political parties often cater to the needs of the working class to gain support, but the economic disparities between different classes influence the political landscape. The rise of **socialist and left-wing movements** in India was largely driven by the demands of the lower classes for better living conditions, wages, and social security.

वर्ग और राजनीति:

वर्ग, जो आर्थिक स्थिति पर आधारित है, भारतीय राजनीति में भी एक केंद्रीय कारक है। मध्यवर्ग और उच्चवर्ग अक्सर अपने संसाधनों, शिक्षा और शिक्त तक पहुँच के कारण अधिक राजनीतिक सिक्रय होते हैं। वे नीति निर्माण और शासन को प्रभावित करने में सक्षम होते हैं। हालांकि, निचले वर्ग और कामकाजी वर्ग (जो अक्सर मज़दूरों, किसानों, और हाशिए पर पड़े समूहों से बना होता है) चुनावों में एक महत्वपूर्ण वोटिंग समूह बनते हैं। राजनीतिक दल अक्सर समर्थन प्राप्त करने के लिए कामकाजी वर्ग की आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक असमानताएँ राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करती हैं। समाजवादी और वामपंथी आंदोलनों का उदय मुख्य रूप से निचले वर्गों द्वारा बेहतर जीवन स्थितियाँ, मजदूरी, और सामाजिक सुरक्षा के लिए की गई मांगों से प्रेरित था।

3. Caste, Class, and Political Mobilization:

In India, the intersection of **caste** and **class** often shapes political mobilization. For instance, **lower castes** (like Dalits, OBCs) and **lower classes** (like the rural poor and urban workers) are often politically mobilized together to form powerful voting blocks. The **Mandal Commission** and its recommendation for **reservation** based on caste led to the rise of **caste-based political parties**, which sought to represent the interests of the lower castes and backward classes. At the same time, **economic class** struggles, such as those involving **land reforms** or **labor rights**, have also played a significant role in the political landscape, as parties representing the working class have pushed for economic justice.

जाति, वर्ग और राजनीतिक आंदोलनः

भारत में जाति और वर्ग का मिलाजुला रूप अक्सर राजनीतिक सक्रियता को आकार देता है। उदाहरण के तौर पर, निचली जातियाँ (जैसे दिलत, ओबीसी) और निचला वर्ग (जैसे ग्रामीण गरीब और शहरी श्रिमक) अक्सर एक साथ राजनीतिक रूप से सिक्रय हो जाते हैं और शक्तिशाली वोटिंग ब्लॉक बनाते हैं। मंडल आयोग और उसकी जाति आधारित आरक्षण की सिफारिशों ने जाति-आधारित राजनीतिक दलों के उदय को बढ़ावा दिया, जो निचली जातियों और पिछड़ी जातियों के हितों का प्रतिनिधित्व करना चाहते थे। साथ ही, आर्थिक वर्ग संघर्षों, जैसे भूमि सुधार या श्रिमक अधिकारों के मृद्दे, ने भी

राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, क्योंकि श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले दल आर्थिक न्याय के लिए संघर्ष कर रहे थे।

Discuss the nature of rich peasants' and farmer's movement in India.

भारत में अमीर किसानों के आंदोलन की प्रकृति की चर्चा कीजिए।

1. Rich Peasants' Movements:

The rich peasants, also referred to as **agrarian elites** or **land-owning classes**, have had significant influence in shaping farmers' movements in India. They were primarily concerned with securing **land rights**, **revenue policies**, and protecting their economic interests, which were often threatened by colonial policies or later, state-imposed land reforms. The **rich peasants** typically owned larger agricultural lands and had a better economic standing compared to the **poor peasants** or **landless laborers**.

The rich peasants' movements often aimed at ensuring **land tenure security**, and the abolition of excessive taxation or unfair land revenue systems. They were also concerned with **resisting forced land acquisition** by the government for industrial projects. One of the prominent examples of such movements was the **Champaran Satyagraha** (1917) led by **Mahatma Gandhi**, where **indigo planters** (who were wealthy peasants) protested against the oppressive indigo cultivation system under British colonial rule.

धनी किसानों के आंटोलन:

धनी किसान, जिन्हें कृषि अभिजात वर्ग या भूमि मालिक वर्ग भी कहा जाता है, ने भारत में किसानों के आंदोलनों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये मुख्य रूप से भूमि अधिकारों, राजस्व नीतियों और अपने आर्थिक हितों की रक्षा करने से संबंधित थे, जो अक्सर उपनिवेशी नीतियों या बाद में राज्य द्वारा लागू भूमि सुधारों से खतरे में पड़ जाते थे। धनी किसान आमतौर पर बड़े कृषि भूमि के मालिक होते थे और गरीब किसानों या भूमिहीन श्रमिकों की तुलना में बेहतर आर्थिक स्थिति में होते थे।

धनी किसानों के आंदोलनों का उद्देश्य अक्सर भूमि स्थायित्व सुरक्षा और अत्यधिक कराधान या अन्यायपूर्ण भूमि राजस्व प्रणालियों को समाप्त करना होता था। उनका ध्यान सरकारी भूमि अधिग्रहण के खिलाफ प्रतिरोध पर भी केंद्रित था। ऐसे आंदोलनों का एक प्रमुख उदाहरण चंपारण सत्याग्रह (1917) है, जिसे महात्मा गांधी ने नेतृत्व किया, जहाँ नील कृषक (धनी किसान) ने ब्रिटिश उपनिवेशी शासन के तहत दमनकारी नील खेती प्रणाली के खिलाफ विरोध किया।

2. Farmers' Movements (General Peasants' Movements):

On the other hand, the broader **farmers' movements** in India, led by small farmers, poor peasants, and **landless laborers**, were focused on issues like **land reform**, **fair wages**, **reduction of land rents**, and **removal of feudal obligations**. These movements were often **anti-feudal** and **anti-colonial**, with a focus on challenging the exploitative structures in agriculture. **Subaltern groups**, such as **landless peasants** and the **marginalized**, often took part in such movements in an attempt to improve their social and economic conditions.

These movements were not limited to just agrarian issues but also focused on **political empowerment**. For instance, the **Deccan Riots** (1875) and the **Bihar Tenancy Movement** (1940s) were led by poor farmers who sought **lower rents** and **protection from exploitation by landlords**. Similarly, the **Telangana Peasant Movement** (1946-51) was one of the largest and most important peasants' movements, where farmers revolted against the oppressive **feudal system** in the region, demanding better conditions and land reforms.

किसानों के आंदोलन (सामान्य किसानों के आंदोलन):

दूसरी ओर, भारत में व्यापक किसान आंदोलन, जो छोटे किसानों, गरीब किसानों और भूमिहीन श्रमिकों द्वारा नेतृत्व किए गए थे, वे भूमि सुधार, उचित मजदूरी, भूमि किराए में कमी, और जमींदारी प्रथाओं को समाप्त करने जैसे मुद्दों पर केंद्रित थे। ये आंदोलन अक्सर जमींदारी विरोधी और औपनिवेशिक विरोधी होते थे, जो कृषि में शोषणकारी संरचनाओं को चुनौती देने पर ध्यान केंद्रित करते थे। निम्न वर्ग के समूह, जैसे भूमिहीन किसान और हाशिए पर पड़े लोग, अक्सर अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थित सुधारने के लिए ऐसे आंदोलनों में भाग लेते थे।

ये आंदोलन केवल कृषि मुद्दों तक सीमित नहीं थे, बल्कि राजनीतिक सशक्तिकरण पर भी ध्यान केंद्रित करते थे। उदाहरण के लिए, दक्कन दंगे (1875) और बिहार किरायेदारी आंदोलन (1940 के दशक) गरीब किसानों द्वारा नेतृत्व किए गए थे, जिन्होंने कम किराया और जमींदारों द्वारा शोषण से सुरक्षा की मांग की थी। इसी तरह, तेलंगाना किसान आंदोलन (1946-51) एक महत्वपूर्ण और बड़ा किसान आंदोलन था, जहाँ किसानों ने क्षेत्र में जमींदारी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह किया, बेहतर स्थितियाँ और भूमि सुधार की मांग की।

3. Impact of Farmers' Movements:

Both rich peasants' and farmers' movements had a profound impact on the political landscape of India. Rich peasants' movements often aligned with elite interests and were more conservative, focusing on protecting the privileges of the landowning class. However, they also played a role in demanding reforms that benefitted the broader agricultural community. In contrast, general farmers' movements pushed for radical changes, seeking to dismantle the feudal system and achieve economic justice for the marginalized sections of society. These movements contributed to the emergence of rural-based political parties, which later became influential in Indian politics.

किसानों के आंढोलनों का प्रभाव:

धनी किसानों और सामान्य किसानों के आंदोलनों ने भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर गहरा प्रभाव डाला। धनी किसानों के आंदोलन अक्सर अभिजात वर्ग के हितों से जुड़े होते थे और अधिक रूढ़िवादी होते थे, जो भूमि मालिक वर्ग के विशेषाधिकारों की रक्षा करने पर ध्यान केंद्रित करते थे। हालांकि, इन आंदोलनों ने व्यापक कृषि समुदाय को लाभ पहुँचाने वाले सुधारों की भी मांग की थी। इसके विपरीत, सामान्य किसानों के आंदोलन क्रांतिकारी बदलाव के लिए संघर्ष करते थे, जो जमींदारी व्यवस्था को समाप्त करने और समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों के लिए आर्थिक न्याय प्राप्त करने की कोशिश करते थे। इन आंदोलनों ने ग्रामीण आधारित राजनीतिक दलों के उदय में योगदान किया, जो बाद में भारतीय राजनीति में प्रभावशाली बन गए।

Explain the development of multiparty system in India.

भारत में बहुदलीय व्यवस्था के विकास पर प्रकाश डालिए।

1. Early Phase (Post-Independence):

After India gained independence in 1947, the **Indian National Congress (INC)** emerged as the dominant political force, led by **Jawaharlal Nehru**. The Congress had a **monopoly** over Indian politics during the initial years, and India functioned as a **one-party dominant system**. The Congress was able to gain support from a wide range of social groups, and its leaders established a centralised system of governance that suppressed the rise of major opposition parties. However, during this period, smaller parties, such as the **Communist Party of India (CPI)**, **Socialist Party**, and the **Bharatiya Jana Sangh (BJS)**, emerged, but they were not able to challenge the Congress Party's supremacy at the national level.

प्रारंभिक चरण (स्वतंत्रता के बाद):

भारत ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरी, जिसका नेतृत्व जवाहरलाल नेहरू ने किया। कांग्रेस ने प्रारंभिक वर्षों में भारतीय राजनीति में एकपक्षीय प्रभुत्व स्थापित किया। कांग्रेस को विभिन्न सामाजिक वर्गों से समर्थन मिला, और इसके नेताओं ने एक केंद्रीकृत शासकीय प्रणाली स्थापित की, जिसने विपक्षी पार्टियों के उभार को दबा दिया। हालांकि, इस दौरान भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI), समाजवादी पार्टी और भारतीय जनसंघ (BJS) जैसी छोटी पार्टियाँ उभरीं, लेकिन वे कांग्रेस पार्टी की प्रभुत्वता को चुनौती देने में सक्षम नहीं हो पाईं।

2. The 1960s and 1970s - Emergence of Regional Parties:

In the 1960s and 1970s, the Indian political landscape began to change with the emergence of regional parties. The Communist Party of India (Marxist), which gained a significant foothold in West Bengal and Kerala, began to challenge the dominance of the Congress. Additionally, the Dravida Munnetra Kazhagam (DMK) emerged as a significant force in Tamil Nadu, advocating for the rights of the Dravidian people and challenging the Congress. In this period, the Congress's grip on power started to loosen, and more political groups, including regional and caste-based parties, began to gain strength.

The 1970s saw a shift with the rise of Indira Gandhi and the Emergency (1975-77), after which there was a breakdown in the dominance of the Congress. In the 1977 elections, the Janata Party, an alliance of various opposition groups, defeated the Congress and formed the government. This marked the beginning of a multiparty political system in India, as new alliances and coalitions began to take shape.

1960 और 1970 का दशक - क्षेत्रीय दलों का उदय:

1960 और 1970 के दशक में, भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने पश्चिम बंगाल और केरल में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया और कांग्रेस के प्रभुत्व को चुनौती दी। इसके अतिरिक्त, द्रविड़ मुनेत्र कषगम (DMK) ने तिमलनाडु में एक महत्वपूर्ण ताकत के रूप में उभरते हुए द्रविड़ लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया और कांग्रेस को चुनौती दी। इस अवधि में कांग्रेस का प्रभाव घटने लगा और अधिक राजनीतिक समूहों, जिनमें क्षेत्रीय और जाति-आधारित दल शामिल थे, ने ताकत पकडी।

1970 का दशक कांग्रेस के प्रभुत्व का टूटने वाला दशक था, जब इंदिरा गांधी और आपातकाल (1975-77) का उदय हुआ, जिसके बाद कांग्रेस के प्रभुत्व में गिरावट आई। 1977 के चुनावों में, विभिन्न विपक्षी दलों के गठबंधन ने जनता पार्टी के रूप में कांग्रेस को हराया और सरकार बनाई। यह भारत में बहुपक्षीय राजनीतिक प्रणाली की शुरुआत थी, क्योंकि नए गठबंधन और कोलिशन आकार लेने लगे थे।

3. 1980s - Coalition Politics:

By the **1980s**, coalition politics began to take center stage. The Congress, under **Indira Gandhi** and later **Rajiv Gandhi**, continued to be a dominant force but was increasingly challenged by **regional parties** and smaller national parties. The **Bharatiya Janata Party (BJP)**, which emerged from the **Bharatiya Jana Sangh**, began to challenge Congress at the national level, particularly in northern and western India.

The 1980s also witnessed the rise of **regional forces** such as the **Telugu Desam Party** (**TDP**) in **Andhra Pradesh**, **Samajwadi Party** (**SP**) in **Uttar Pradesh**, and **Rashtriya Janata Dal** (**RJD**) in **Bihar**. As these regional parties gained strength, India moved further away from a **single-party system** and towards a **coalition-based system**, where alliances between regional, national, and smaller parties became common.

1980 का दशक - गठबंधन राजनीति:

1980 के दशक तक, गठबंधन राजनीति का महत्व बढ़ने लगा। कांग्रेस, **इंदिरा गांधी** और बाद में राजीव गांधी के नेतृत्व में, एक प्रमुख ताकत बनी रही, लेकिन क्षेत्रीय दलों और छोटे राष्ट्रीय दलों द्वारा उसे चुनौती दी जाने लगी। भारतीय जनता पार्टी (BJP), जो भारतीय जनसंघ से उभरी थी, ने विशेष रूप से उत्तर और पश्चिम भारत में कांग्रेस को राष्ट्रीय स्तर पर चुनौती देना शुरू किया।

1980 के दशक में **क्षेत्रीय ताकतों** का उदय हुआ, जैसे कि तेलुगु देशम पार्टी (TDP) आंध्र प्रदेश में, समाजवादी पार्टी (SP) उत्तर प्रदेश में, और राष्ट्रीय जनता दल (RJD) बिहार में। जैसे-जैसे ये क्षेत्रीय दल मजबूत होते गए, भारत ने एक-पार्टी प्रणाली से दूर होकर गठबंधन-आधारित प्रणाली की ओर बढ़ना शुरू किया, जहां क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और छोटे दलों के बीच गठबंधन सामान्य हो गए थे।

4. 1990s - The Era of Coalition Governments:

The **1990s** marked the consolidation of coalition politics in India. The **BJP** and the **Congress** were no longer the only significant national parties. With the decline in Congress's influence, smaller regional and caste-based parties began to play a critical role. The **1996 general elections** were a turning point, as no party was able to secure a **clear majority**, leading to the formation of a **coalition government** under **H. D. Deve Gowda**.

Subsequently, the **United Front** (a coalition of regional and smaller parties) formed a government in 1996, followed by the **National Democratic Alliance** (**NDA**) led by the **BJP** in 1998. This period saw the rise of a **multiparty system** that was characterized by **coalition governments**, with alliances of diverse political ideologies coming together to form the government. The role of **regional parties** became more prominent, as they could no longer be ignored in the political arena.

1990 का दशक - गठबंधन सरकारों का युग:

1990 का दशक भारत में गठबंधन राजनीति की मजबूत होने वाली अवधि थी। BJP और Congress अब केवल प्रमुख राष्ट्रीय दल नहीं थे। कांग्रेस के प्रभाव में कमी के साथ, छोटे क्षेत्रीय और जाति-आधारित दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू की। 1996 के आम चुनाव एक महत्वपूर्ण मोड़ थे, क्योंकि कोई भी पार्टी स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर पाई, जिसके परिणामस्वरूप एच.डी. देवे गौड़ा के नेतृत्व में एक गठबंधन सरकार का गठन हुआ।

इसके बाद, यूनाइटेड फ्रंट (क्षेत्रीय और छोटे दलों का गठबंधन) ने 1996 में सरकार बनाई, और इसके बाद राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने 1998 में BJP के नेतृत्व में सरकार बनाई। इस अविध में एक बहुपक्षीय प्रणाली का उभार हुआ, जिसमें गठबंधन सरकारें बनीं, जहां विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के गठबंधन सरकार बनाने के लिए एकजुट होते थे। क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई, क्योंकि अब उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था।

5. 2000s to Present - Further Strengthening of Coalition Politics:

In the 2000s and beyond, India saw the continued rise of **coalition politics** with **regional parties** playing a key role in forming national governments. The **Congress** and the **BJP** remained dominant, but neither could rule alone in most cases. The **United Progressive Alliance** (**UPA**), led by Congress, and the **National Democratic Alliance** (**NDA**), led by BJP, alternated in power, and smaller parties continued to play an important role in shaping the direction of the government.

The rise of regional parties like the **Trinamool Congress** (**TMC**) in **West Bengal**, **Aam Aadmi Party** (**AAP**) in **Delhi**, and others have further added complexity to the **multiparty system**, resulting in more **coalition governments** at both the state and national levels.

2000 से वर्तमान - गठबंधन राजनीति का और मजबूत होना:

2000 के दशक और इसके बाद, भारत में गठबंधन राजनीति का और उभार हुआ, जिसमें क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय सरकारें बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कांग्रेस और BJP प्रमुख दल बने रहे, लेकिन अधिकांश मामलों में वे अकेले शासन नहीं कर पाए। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA), जिसका नेतृत्व कांग्रेस ने किया, और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA), जिसका नेतृत्व BJP ने किया, सत्ता में बने रहे, और छोटे दलों ने सरकार की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तृणमूल कांग्रेस (TMC) पश्चिम बंगाल में, आम आदमी पार्टी (AAP) दिल्ली में, और अन्य क्षेत्रीय दलों के उभार ने बहुपक्षीय प्रणाली को और जटिल बना दिया, जिससे राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अधिक गठबंधन सरकारें बनीं।